R :- चल उड़ जा रे पंछी यह देश हुआ बेगाना–

ओम शान्ति। बच्चे जानते हैं कि इस पुरानी बादशाही में नयी राजधानी स्थापन हो रही है। कौन कर रहा है? पारलौकिक नालेजफुल **P**। उसमें ही नॉलेज है रचयिता और रचना की। अब अपन को वह हिस्ट्री जाग्राफी नहीं पढ़नी है कि अकबर आया, औरंगजेब आया, हेनरी एडवर्ड आया। स्कूल में हिस्ट्री जाग्राफी पढ़ी जाती है। साइंस, मैथेमेटिक्स, ड्राइंग आदि में दुनियाँ का समाचार नहीं है; परन्तु हिस्ट्री जाग्राफी में दुनियाँ का समाचार है। तो बाबा आकर बेहद की हिस्ट्री जाग्राफी समझाता है। तो बेहद दुनियां से बाबा आकर नयी सृष्टि रच रहा है, और पुराने का विनाश होना है। जो आकर समझाता है। ब्रह्माण्ड से लेकर सतयुग आदि से कलियुग अन्त तक आकर राज़ समझाते हैं कि हम बच्चे आत्माएँ वहाँ कैसे रहते हैं। हर एक आत्मा में कैसे अपना2 पार्ट मर्ज है। यह दुनियाँ नहीं जानती। मनुष्य को न नालेजफुल, न आलमाइटी, न अथॉरिटी कहा जाता। नॉलेजफुल होता है बीज। जो क्रिएटर है। अपन न है क्रिएटर, न है अपन को रचना की नॉलेज। आत्मा क्रिएटर है। अगर हम हर एक रचयिता हो तो रचना की नालेज भी होगी; परन्तु नहीं जानते इसलिए हम इडीयट हैं। वो **P** सब कुछ जानते हैं इसलिए उनको जानी जाननहार कहा जाता है; क्योंकि वह चैतन्य बीज हैं, चैतन्य बीज से चैतन्य झाड़ निकलता है। तो वह जान सक... हैं और आकर रचना की नालेज .... है।

यह तो सभी जानते कि परमात्मा नालेजफुल है। अब वह आकर बच्चे पैदा करते और उन्हों को नालेज देते। तो बच्चे भी जान जाते हैं। बच्चे छोटे से लेकर बड़े तक पढ़ सकते हैं। इसमें कम से कम 4–5 वर्ष का जरूर होना चाहिए। भल छोटे बच्चे ध्यान में चले जाते; परन्तु ज्ञान समझने लिये बुद्धि चाहिए। इसलिये लौकिक बच्चों को भी पढ़ाय सकते हैं। .... आकर प्रवेश कर छोटे, बड़े, बूढ़े को पढ़ाते हैं। छोटे बच्चे जास्ती पढ़ सकते हैं। जवान और बूढ़े को जास्ती चाहना होगी। कारण कि उन्हों की बुद्धि धंधे वगैरह में लगी हुई है। इसलिये कन्याएँ जास्ती उठाती हैं। अब बाप समझता कि बच्चा मेरा धंधा सीख वह धंधा करे; परन्तु अब बाबा कहता जैसे इस मम्मा बाबा और दादा का धंधा है वैसे तुम बच्चों का धंधा होना चाहिए। अगर यह न पढ़ावेंगे तो पद पा न सकेंगे। लौकिक वर्सा भी (पा न) सकेंगे। क्योंकि वह अब मिलना नहीं है, विनाश होना है। और न फिर यह पारलौकिक वर्सा पा सकेंगे। मृत्यु सामने है। तो क्यों न यह अविनाशी वर्सा लेना चाहिए; परन्तु जब ज्ञान की धारणा हो तब इस फरमान को समझे और अपने बच्चों को समझावे। ज्ञान के सिवाय तो बच्चे बगुले बन जाते हैं। तो फिर हंस और बगुले तो इकट्ठे रह नहीं सकते। बच्चे न माने तो हो गया कुपुत। ऐसे कुपुत बच्चे को फिर कहना पड़े कि जाओ हम तुमको यह वर्सा भी नहीं दे सकते हैं। तो बाबा के लिये बहुत कड़ी मंजिल है। तब कहते कोटों में कोई ठहर सकेंगे। इसमें जास्ती कन्याएँ ठहर सकेंगी। कन्या लिये बाप का वायब्रेशन नहीं .. .. इसको जास्ती पढ़ाकर धंधा सिखलावे। हमको(इसको) तो जाकर घर सँभालना है। तो कन्या के .... बोझा धंधे का तो रहता नहीं; परन्तु जब कि बाप कुछ समझ जाय तो ..... । परन्तु बिचारियों को विघ्न बहुत पड़ते हैं। नहीं तो उनकी लाइफ है ही स्टडी करने लिये। बापदादा का धंधा है पढ़ना और पढ़ाना। एक तरफ़ पढ़ते रहेंगे दूसरे तरफ़ पढ़ाते रहेंगे।

ऐसा स्कूल कोई नहीं है, जहां पढ़ते जाय और पढ़ाते जाय। यही **P** का स्कूल है जहाँ शुरू से जब से बाबा ने प्रवेश किया है तब से लेकर टेव निकली है पढ़ना और पढ़ाना। कराची से लेकर बाबा–मम्मा और तुम पढ़ते थे, और नये को पढ़ाते थे। भल पाकिस्तान हिन्दुस्तान के हंगामे होने कारण कुछ समय इतने नहीं पढ़ने आये। आबू में भी इतने पढ़ने नहीं आये। तो फिर आखरीन में तुमको निकलना पड़ा; परन्तु जो कुछ हम पढ़ते हैं वह हम पढ़ाते रहते हैं। वहाँ तो इम्तहान पास कर सर्टिफिकेट ले फिर पढ़ाते हैं; परन्तु हमको इस सर्विस करने बाद ऑटोमेटिकली सर्टिफिकेट मिल जाता है। यहाँ व्यवहार की बात नहीं, परन्तु जो पढ़ा नहीं सकते, उनको झाड़ू लगाना, रोटी पकाना है। कम सर्विस करेंगे तो कम दर्जा को पावेंगे। वहाँ भी तो जाकर अन्दर देवदासी बनेंगे ना। देवदासियों में भी नम्बरवार दर्जे हैं। न पढ़ेंगे तो कम पद पावेंगे। जो चले जावेंगे वो प्रजा में जाकर बिल्कुल ही कम पद पावेंगे। बाकी तो जो माँ, बाबा, दादे का धंधा वह हमारा धंधा। तो अपने बाल–बच्चों, स्त्री को भी पढ़ाना है। बाबा को फालो करना है। जो पढ़ते हैं, बाबा को मदद करते हैं, उन्हों के लिए यह धन भी है। वह बाबा अविनाशी धन देता है और विनाशी धन कोई के बुद्धि में बैठ हुन्डी के बुद्धि में बैठ हुन्डी भरावेगा अथवा दिलायेगा। बाबा अविनाशी धन डायरैक्ट देता है और विनाशी धन इनडायरैक्ट दिलाता है। जैसे बाबा अविनाशी धन देता है, जो अविनाशी धन दान करने से जाकर साहुकार राजाओं पास जन्म लेते हैं। तो इनडायरैक्टली विनाशी धन साहुकारों, राजाओं द्वारा दिलाता है। तो यह है रूहानी नालेज। जो माँ, बाबा धंधा करते हैं तो बच्चों का काम है यह धंधा करना। .... का काम है सुनना और सुनाना। अब बच्चों को पढ़ाने लिये पुरूषार्थ चल रहा है। क्योंकि बच्चे जल्दी पढ़ सकते हैं। बूढ़ों की तो बुद्धि लोभ, मोह में होने कारण जड़–जड़ीभूत अवस्था हो गई है। धारणा तो बूढ़े भी कर सकते हैं क्योंकि ज्ञान बिल्कुल सहज है; परन्तु देहीअभिमानी न होने कारण देह अभिमान में फँस मोह में फँसने कारण धारण नहीं कर सकते। यह बच्चियाँ ही बड़े–बड़े पी.एच.डी. आदि जैसे को ज्ञान देंगी जो अहंकारी हैं। तो यह ऐसा छोटे बच्चों बच्चियों का कॉलेज अथवा यूनिवर्सिटी निकलनी है। छोटे बच्चे कोई ध्यान में भल जावेंगे; परन्तु ज्ञान नहीं तो वर्थ नॉट ए पेनी। सा॰ की औरों को कितनी आस होती है; परन्तु अपन कहते कि सा॰ तो वर्थ नॉट ए पेनी है। यह जो नौधा भक्ति में सा॰ होता है, जैसे मीरा को हुआ, तो क्या हुआ? फिर भी जन्म–मरण में आती और गिरती रहेगी। जो ऊपर से नये सोल्स आते हैं वह इस समय अपना अच्छा प्रभाव दिखलाते हैं। फिर तो उन्हों को भी गिरना ही है; क्योंकि गोल्डन, सिल्वर, कॉपर, आयरन अवस्था में सबको आना ही है अर्थात् गिरते रहना ही है। ऊपर से आते वह कुछ अपना अच्छा ढंग दिखलाते हैं। अच्छी चलन दिखलाई बाकी तो गिरना ही है। जब नये सोल्स आते होंगे उनकी कुछ गोल्डन, सिल्वर एज दिखाई पड़ती होगी। यह महीन राज़ है जो नये बच्चे हैं वह नहीं जान सकते। विचार–सागर–मंथन करने से तुम भी इन राज़ों को जान सकते। बाकी तो कोटों में कोई समझेंगे। साहुकारों के नसीब में नहीं है। अब तो जो अबलाएँ हैं, जिनके पास कुछ नहीं है वह आती हैं।

कहते हैं ना गरीब निवाज़ अबलाओं को बल देने वाला। इसलिए गरीब बहुत उठाते हैं। बाकी साहुकार बहुत कम उठाते हैं। उन्हों के बुद्धि में आता ही नहीं जो ऐसे समझे स्त्री, स्त्री नहीं, पुत्र, पुत्र नहीं। जब बाप की बुद्धि में बैठे तो नौकरी बच्चे को करनी नहीं है, मेरा लौकिक वर्सा इनको मिलना नहीं है, तो यह फिर अविनाशी वरसा बच्चों को दिलावे ऐसा कौन बाप होगा जो खुद मालामाल होवे और चाहेगा कि बच्चे कंगाल बन जावे। तो इतनी दूरांदेशी बुद्धि, विशाल बुद्धि चाहिए जो कोटों में विरला। है सारा बाप क्रियटर के ऊपर मदार। तो बाप को विचार आना चाहिए कि बच्चों को क्या पढ़ाना चाहिए भविष्य में यही पढ़ाई काम आवेगी। वह राजविद्या अब काम में नहीं आवेगी। देखो अष्टावक्र ने सबकुछ ले लिया तो जनक की आसक्ति टूट जाय। तो आसक्ति होनी चाहिए एक बाबा में और पढ़ाई में। तो पढ़कर फिर पढ़ाना है, खुद नहीं सिर्फ बनना है; परन्तु औरों को भी बनाना है। ऐसा नहीं कि सन्यासी मुआफिक बाबा घरबार छुड़ाकर बिठा देगा। बाबा कहेगा बच्चों को भी सिखलाओ। तुम्हारा बच्चा विनाशी धंधा करता है उनको अविनाशी धंधा सिखाओ। बच्चे को बोलो अगर यह पढ़ाई न पढ़ेंगे तो यह विनाशी वरसा भी हम दे नहीं सकते। निकलो घर से बाहर। ऐसा कहने वाला बाप कोई मुश्किल है। इस मंजिल पर कोई विरला पहुँच सकते। हाँ, बाबा की कशश से कोई विरला निकल आवे तो हो सकता है। यह बहुत मेहनत की पढ़ाई है जो खुद पढ़कर फिर औरों का भी कल्याण कर ले। कोई आकर इन्डिविड्युअल पूछे तो उनको बताय सकते कि तुमको ऐसे करना चाहिए। बहुत ऊँची सीढ़ी है, महीन पढ़ाई है, रहना भी घर में पड़ता है जो स्त्री और बच्चों को पढ़ावे। घर में न रहे, स्त्री बच्चों का कल्याण कौन करे। क्योंकि चैरिटी बिगन्स एट होम। तुम्हारी बात अलग है। हम बाप को यहाँ ले आवें तो फिर स्त्री का हुक़म तो घर पर चल नहीं सकता। बाप का फरमान चल सकता है। फरमान न माने तो स्त्री स्त्री नहीं, बच्चा बच्चा नहीं। माँ क्रियटर नहीं है तो उनका फरमान चल नहीं सकता।

चेम्बर –

बाहर में बहुत हैं जो बड़ों बड़ों को ले आते हैं और समझाते हैं। उन्हों को शौक है समझाने का। प्लैन्स ऐसे निकल रहे हैं जो बहुत सहज समझाय सकते हैं। दिन–प्रति दिन सहज हो रहा है। सारा दिन ऐसा विचार चलता है कि ऐसी कौनसी यूजफुल चीज़ है जिससे नालेज मिल सके। तो यह है त्रिमूर्ति चित्र सबसे अच्छा। तो बाबा को बहुत हॉबी है चित्र बनाने की। इस चित्र में ऐसे फर्स्ट क्लास नालेज नूँधी हुई है जो बात मत पूछो। ख्याल करता कि जो हैन्ड बैग्स हाथ में उठाते हैं वह बनावे। यह भी एक एडवर्टाइज है जिससे बहुत आवेंगे समझेंगे तो कुछ हॉस्टिल, कॉलेज बनवायेंगे। अच्छा चलो। ओम् शान्ति।